वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 388
ISBN-978-93-82071-72-3

# बीस तीर्थंकर स्तुति

*–रचयित्री –*

**जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,**
**दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत**
**परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि**
**श्री ज्ञानमती माताजी**

शरदपूर्णिमा महोत्सव-2012, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 61वें त्यागदिवस के अवसर पर घोषित चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013 के अन्तर्गत प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के रजत दीक्षा महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित

**-प्रकाशक-**

**दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान**
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

| प्रथम संस्करण | वीर नि. सं. 2539 | मूल्य |
|---|---|---|
| 1100 प्रतियाँ | श्रावण शु. एकादशी, 17 अगस्त 2013 | 16/-रु. |

**दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित**

## वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

*–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–*

**परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी**

*–: मार्गदर्शन :–*

**प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी**
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

*–: निर्देशक एवं सम्पादक:–*

**कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी**

*–: प्रबंध सम्पादक :–*

**जीवन प्रकाश जैन**

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

**कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क**
**जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.**

# सम्पादकीय

**–स्वस्तिश्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी**

प्रवचनसार ग्रंथ में आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव ने कहा है–

जीव के शुभ, अशुभ परिणाम ही उसे तदनुरूप फल प्रदान करते हैं। अशुभोपयोग से यह जीव तिर्यंच, नारकी एवं कुमानुष होकर सहस्रों दुःखों को सहन करता हुआ संसार में परिभ्रमण करता है और धर्म से परिणत होकर शुभोपयोग से स्वर्ग सुख और शुद्धोपयोग से निर्वाण प्राप्त कर लेता है।

जीव के जन्म-जन्मान्तरों का पुण्य संचित होकर एक साथ उदय में आने पर ही उसे जिनधर्म, जिनवाणी एवं गुरुवाणी सुनने का साधन प्राप्त होता है, जिससे शुभोपयोग में जीव का समय व्यतीत होता है अन्यथा तो सभी संसारी प्राणी दिन रात अशुभोपयोग अर्थात् पाप क्रियाओं में रत रहते हैं और संक्लेशित होकर अपार कष्ट उठाते हैं। कहने का अभिप्राय मात्र इतना ही है कि अशुभोपयोग के बचने के लिए प्रत्येक श्रावक को भगवान की भक्ति, पूजा, स्तोत्र पाठ, तीर्थयात्रा तथा सत्पात्र में दानादि करना चाहिए, जो शुभोपयोग के अंग हैं। कुन्दकुन्द स्वामी ने तो श्रावकों के लिए ''दाणं पूजा मुक्खो सावय धम्मो ण सावया तेण विणा'' कहा है अर्थात् श्रावक के लिए दान और पूजन आदि दोनों ही आवश्यक हैं उनके बिना वह श्रावक नहीं कहलाता है। पूजन, स्तोत्र पाठ द्वारा जिनेन्द्रभक्ति की परम्परा सर्वप्राचीन है, बड़े-बड़े दिग्गज आचार्यों जैसे समन्तभद्र, मानतुंग आदि के द्वारा स्तोत्र रचना कर जिनधर्म की महिमा का चमत्कार दर्शाने का वर्णन शास्त्र-पुराणों में वर्णित है।

उसी क्रम में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य लेखन का अनुपमेय कार्य करते हुए 300 ग्रंथों का लेखन किया है, जिसमें उच्चकोटि के ग्रंथों के साथ-साथ अनेक स्तोत्र रचनाएं भी की हैं, जिसमें से अनेक स्तोत्रों का चमत्कार देखने में आया है, स्तोत्र रचना में उनकी यह सुन्दर कृति ''बीस तीर्थंकर स्तुति'' है, जिसके द्वारा पाठकगण भगवत् भक्ति करते हुए उनके जीवन से परिचित हों और महान पुण्य का संचय करें, साथ ही ऐसी अनमोल कृतियों की प्रदात्री पूज्य माताजी स्वस्थ एवं चिरायु रहते हुए हम पर अपना ज्ञानमयी-वात्सल्यमयी वरदहस्त बनाए रखें, यही वीरप्रभू के चरणों में विनम्र प्रार्थना है।



# प्रस्तावना

**–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)**

मध्यलोक के असंख्यात द्वीप-समुद्रों में प्रथम द्वीप जम्बूद्वीप है, जिसको घेरकर लवण समुद्र है, लवण समुद्र को घेरकर धातकीखण्ड, पुनः कालोदधि समुद्र, पुष्करवर द्वीप पुनः पुष्करवर समुद्र है तथा पुष्करद्वीप के ठीक बीच में चूड़ी के समान आकार वाला एक मानुषोत्तर पर्वत है जहाँ तक मनुष्य लोक की सीमा है, आगम की भाषा में इसे ढ़ाई द्वीप कहते हैं। इसके आगे भी असंख्यात द्वीप एवं समुद्र हैं। इन ढाई द्वीपों में 5 भरत एवं 5 ऐरावत क्षेत्रों में षट्काल परिवर्तन होता रहता है अतएव मात्र चतुर्थकाल में ही 24 तीर्थंकर होते हैं। वर्तमान में पंचमकाल में यहाँ कोई तीर्थंकर नहीं हैं किन्तु ढाई द्वीप के 32 विदेह क्षेत्रों में सदैव चतुर्थकाल रहने से वहाँ सदैव तीर्थंकर भगवान विद्यमान रहते हैं, वर्तमान में वहाँ 20 तीर्थंकर विद्यमान हैं, जो सतत विहार करने से ''विहरमाण बीस तीर्थंकर'' भी कहे जाते हैं।

कम से कम इतने तीर्थंकर सतत विदेह क्षेत्र में रहते ही हैं और अधिक से अधिक एक साथ होवें तो 5 मेरु संबंधी 160 तीर्थंकर एक साथ विदेह क्षेत्र में रह सकते हैं। प्रत्येक विदेहों में भी भरतक्षेत्र के समान 6-6 खण्ड होते हैं उनमें भी आर्यखण्डों में ही तीर्थंकर का जन्म होता है। विदेह क्षेत्र में उत्कृष्ट आयु 1 कोटि पूर्व की है अतः वे तीर्थंकर भी अपनी आयु पूर्ण कर जब मोक्ष चले जाते हैं, तब वहीं विदेह क्षेत्र में दूसरे तीर्थंकर का जन्म होता है।

नित्यमह पूजा करने वाले श्रावक-श्राविकाएं प्रायः मंदिरों में बीस तीर्थंकर पूजा करते देखे जाते हैं लेकिन उनकी स्तुतिपरक कोई साहित्य हो अथवा कोई विधान हो, यह सुनने में नहीं आया। यह बीसवीं शताब्दी का महान सौभाग्य ही है जिसे इस कलिकाल में 300 ग्रंथों की रचनाकर्त्री, साक्षात् सरस्वतीस्वरूपा परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जैसी अनमोल निधि प्राप्त हुई, जिन्होंने जिनधर्म, जिनाम एवं जिनसंस्कृति का संरक्षण-संवर्धन करते हुए अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्पूर्ण विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया। जिनेन्द्र भगवान के प्रति अकाट्य भक्ति रखने वालीपूज्य माताजी ने साहित्य सृजन के क्षेत्र में अनेक उच्चकोटि के ग्रंथों में भगवत् भक्ति में अनेक संस्कृत-हिन्दी स्तुतियों, पूजा-विधानों आदि की रचना की है, जिसके द्वारा भक्त जिनभक्ति कर संसार जलाधि से तिरने का सुन्दर माध्यम प्राप्त कर सकते हैं, उसी श्रृँखला में पूज्य माताजी द्वारा लिखित गागर में सागर सदृश यह अमूल्य कृति ''बीस तीर्थंकर स्तुति'' है। बीस तीर्थंकर भगवन्तों की भक्ति में तन्मय कर कर्मश्रृँखला को काटने में निमित्तभूत इस सुन्दर कृति के द्वारा भव्यात्मा जीव तीर्थंकर गुणानुवाद करते हुए मोक्षमार्ग के पथिक बनें, यही बीस तीर्थंकरों के पावन श्रीचरणों में मंगल प्रार्थना है।

# परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
# श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

**–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती**

**जन्मस्थान**–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

**जन्मतिथि**–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

**जाति**–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

**माता-पिता**–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

**आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत**–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

**क्षुल्लिका दीक्षा**–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम– क्षुल्लिका वीरमती

**आर्यिका दीक्षा**–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

**साहित्यिक कृतित्व**–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

**डी.लिट्. की मानद उपाधि**–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

**तीर्थ निर्माण प्रेरणा**–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा- भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमामहावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थइत्यादि।

**महोत्सव प्रेरणा**–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डलविधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

**शैक्षणिक प्रेरणा**–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

**रथ प्रवर्तन प्रेरणा**–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

*इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।*



# दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

**–जीवन प्रकाश जैन (प्रबंध सम्पादक)**

ईसवी सन् 1972 में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित उक्त संस्था के द्वारा जम्बूद्वीप रचना के निर्माण हेतु मेरठ (उ.प्र.) के ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर में नशिया मार्ग पर जुलाई 1974 में एक भूमि क्रय की गई, जहाँ सर्वप्रथम 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण सात हाथ (सवा दस फुट) ऊँची खड्गासन प्रतिमा विराजमान करने हेतु फरवरी 1975 में एक लघुकाय जिनालय का निर्माण किया गया, जो सन् 1990 में एक अनोखे 'कमल मंदिर' के रूप में निर्मित हुआ है। यहाँ विराजमान कल्पवृक्ष भगवान महावीर से यह अतिशय क्षेत्र निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर होता हुआ नित्य नये निर्माणों के द्वारा संसार में अद्वितीय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध हुआ है। इस प्रतिमा के दर्शन करके भक्तगण अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

**जम्बूद्वीप निर्माण का प्रथम चरण**–जुलाई सन् 1974 में रखी गई नींव के आधार पर जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में सर्वप्रथम आगम वर्णित सुमेरुपर्वत (101 फुट ऊँचा) का निर्माण अप्रैल सन् 1979 में एवं सन् 1985 में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण पूर्ण हुआ। सोलह जिनमंदिरों से समन्वित उस सुमेरुपर्वत के अंदर से निर्मित 136 सीढ़ियों से चढ़कर श्रद्धालु भक्त समस्त भगवन्तों के दर्शन करके जब सबसे ऊपर पाण्डुकशिला के निकट पहुँचते हैं, तो नीचे जम्बूद्वीप रचना के सभी नदी, पर्वत, मंदिर, उपवन आदि दृश्यों के साथ-साथ हस्तिनापुर के आसपास के सुदूरवर्ती ग्रामों का भी प्राकृतिक सौंदर्य देखकर फूले नहीं समाते हैं।

**यात्री सुविधा**–हस्तिनापुर तीर्थ में जम्बूद्वीप स्थल के पूरे परिसर में संस्थान द्वारा कार्यालय का सक्रिय संचालन किया जाता है। वहाँ यात्रियों के ठहरने हेतु आधुनिक सुविधायुक्त 200 कमरे, 50 से अधिक डीलक्स फ्लैट एवं अनेकों गेस्ट हाउस (बंगले) बने हुए हैं। इसके साथ ही यहाँ सुन्दर भोजनालय है जहाँ यात्रियों को सुविधापूर्वक शुद्ध भोजन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त 2 किमी. दूर हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन में सरकारी अस्पताल, डाकखाना, बाजार, इंटरकालेज तथा अन्य शिक्षण संस्थाएँ आदि सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

**हस्तिनापुर कैसे पहुँचे ?**–भारत की राजधानी दिल्ली से 110 किमी. पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जिला-मेरठ से 40 किमी. दूर हस्तिनापुर तीर्थ है। राजधानी दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए अंतर्राज्यी बस अड्डे अथवा आनंद विहार बस अड्डे से उत्तरप्रदेश रोडवेज तथा डी.टी.सी. बसों की निरंतर सेवा उपलब्ध है। मेरठ से भी प्रति आधे घंटे के अंतराल से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पहुँचने हेतु रोडवेज की बसें सुलभता के साथ उपलब्ध रहती हैं। 'जम्बूद्वीप' के नाम से ये बसें चलती हैं जो सीधे जम्बूद्वीप के सामने ही रुकती हैं और जम्बूद्वीप से ही मेरठ, दिल्ली, तिजारा आदि यात्रा हेतु बसें उपलब्ध रहती हैं। दिल्ली और मेरठ के बीच रेल सेवा भी है। देश-विदेश के यात्रीगण हस्तिनापुर पधारकर इस धरती का स्वर्ग मानी जाने वाली 'जम्बूद्वीप रचना' के दर्शन करें और मानसिक शांति का अनुभव करते हुए मनवांछित फल प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।

## वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, रोशनावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कॉनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

## वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)
20. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
21. श्रीमती आदर्श जैन ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
22. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)।



# विषय-सूची


| क्र.सं. | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| 1. | बीस तीर्थंकर स्तुतिः | 1 |
| 2. | बीस तीर्थंकरनाम स्तुति | 3 |
| 3. | पाँच महाविदेह संबंधी विद्यमान बीस तीर्थंकर | 4 |
| 4. | श्री सीमंधर तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 5 |
| 5. | श्री युगमंधर तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 6 |
| 6. | श्री बाहु तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 7 |
| 7. | श्री सुबाहु तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 8 |
| 8. | श्री संजातक तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 9 |
| 9. | श्री स्वयंप्रभ तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 10 |
| 10. | श्री ऋषभानन तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 11 |
| 11. | श्री अनंतवीर्य तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 12 |
| 12. | श्री सूरिप्रभ तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 13 |
| 13. | श्री विशालकीर्ति तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 14 |
| 14. | श्री वज्रधर तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 15 |
| 15. | श्री चन्द्रानन तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 16 |
| 16. | श्री चन्द्रबाहु तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 16 |
| 17. | श्री भुजंगम तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 17 |
| 18. | श्री ईश्वर तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 18 |
| 19. | श्री नेमिप्रभ तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 19 |
| 20. | श्री वीरसेन तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 20 |
| 21. | श्री महाभद्र तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 21 |
| 22. | श्री देवयश तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 22 |
| 23. | श्री अजितवीर्य तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति | 23 |

# बीस तीर्थंकर स्तुतिः

## अनादिनिधन मूलमंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

श्रीमान् सीमंधरो देवः, भगवान् युगमंधरः।
बाहुस्वामी सुबाहुश्च, श्रीसुजातः स्वयंप्रभुः।।१।।

वृषभाननतीर्थेशो-ऽनंतवीर्यः जिनेश्वरः।
सूरिप्रभः श्रीविशाल-कीर्तिर्वज्रधरो जिनः।।२।।

चंद्राननो भद्रबाहुः, भुजंगमस्तथेश्वरः।
नेमिप्रभो वीरसेनः, महाभद्रो महानपि।।३।।

देवयशोऽजितवीर्यश-चेत्येते विंशतिर्जिनाः।
कुर्वंतु मंगलं नित्यं, विद्यमाना विदेहजाः।।४।।

जम्बूद्वीपेऽथ मध्येऽस्ति, मेरोः पूर्वापरदिशोः।
पूर्वापरविदेहौ तन्-मध्ये नद्यौ च द्वे अपि।।५।।

ततश्चतुर्भागेष्वपि, चतुर्वक्षारशैलतः।
त्रिविभंगानदीभिश्चा-प्यष्टौ भागा विदेहके।।६।।



द्वात्रिंशत् ये विदेहो स्युः, तावंतः प्रतिमेर्वपि।
विदेहनामक्षेत्राणि, षष्ट्युत्तरशतानि वै।।७।।

सीताया उत्तरे भागे, ह्यास्ते सीमंधरो जिनः।
दक्षिणे राजते चापि, युमंधरतीर्थकृत्।।८।।

सीतोदापाचि श्रीबाहुः, सुबाहुरुत्तरे तटे।
प्रत्यहं विहरन्तो ये, कुर्युरत्रापि मंगलम्।।९।।

पंचमहाविदेहेषु, चतुश्चतुर्जिनेश्वराः।
एवं विंशतयोऽप्येते, विहरंति सदा भुवि।।१०।।

हीनादपि विंशतियो, युगपत् चाधिका अपि।
सप्तत्युत्तरशतानि, तीर्थंकरा भवंत्यपि।।११।।

भरतैरावतस्थानां, संख्येयं दशमेलने।
तांस्तान् सर्वांश्च वंदेहं, ज्ञानमत्यै श्रियै ध्रुवं।।१२।।

केचिच्च द्वित्रिकल्याणा, अपि तत्र भवंत्यमीः।
सर्वे पुनंतु मे चित्तं, पंचकल्याणनायकाः।।१३।।

स्तोत्रमेवं पठेन्नित्यं, दर्शनं प्राक् करोत्यसौ।
सीमंधरजिनस्यानु, सर्वकल्याणभाग् भवेत्।।१४।।

# बीस तीर्थंकरनाम स्तुति

श्रीमान् सीमंधर युगमंधर, बाहू जिन तथासुबाहू हैं।
संजात स्वयंप्रभ वृषभानन, श्रीअनंतवीर्य को ध्याऊँ मैं।।
श्री सूरप्रभ विशालकीर्ति, जिनराज वज्रधर चन्द्रानन।
श्री भद्रबाहु जिन भूजंगम, ईश्वर नेमिप्रभ शिवासान।।१।।

श्री वीरषेण और महाभद्र, जिनदेव देवयश अजितवीर्य।
ये बीस जिनेश्वर विद्यमान, रहते विदेह में जगतकीर्त्य।।
इन सबको मेरा नमस्कार, हों बार-बार ये सुखकारी।
ये बीसों तीर्थंकर नितप्रति, हों हम सबको मंगलकारी।।२।।

इस जंबूद्वीप मध्य मेरू के, पूर्व अपर दिश में जानो।
ये पूर्व और पश्चिम विदेह, इन दोनों मध्य नदी मानो।।
इस विध इन चारों भागों में, चउ-चउ वक्षार शैल माने।
त्रय-त्रय विभंगनदियों से भी, इक-इक के आठ भेद माने।।३।।

ये सब विदेह बत्तीस हुये, इस विध प्रत्येक मेरु के भी।
बत्तिस-बत्तीस कहे इससे, हैं इक सौ साठ विदेह सभी।।
इस जंबूद्वीप में सीमा के, उत्तर में 'सीमंधर' जिन हैं।
सीता नदि के दक्षिण तट में, नित राजित 'युगमंधर' जिन हैं।।४।।

सीतोदा दक्षिण 'बाहू' जिन, उत्तर दिश में 'सुबाहु' राजें।
वे विहरें वहाँ तथापि यहाँ, पर भी हों नित मंगल काजें।।
पांचों भी महाविदेहों में, हैं चार-चार जिन तीर्थंकर।
ये बीसों नित्य विहरते हैं, शाश्वत् जिनवर इस पृथ्वी पर।।५।।

कम से कम बीस तथा युगपत, हों अधिक-अधिक भी यदी कभी।
इक सौ सत्तर हो सकते हैं, तीर्थंकर जग में कभी-कभी।।
भरतैरावत दश क्षेत्रों के, दश मिलने से ही यह गणना।
ध्रुव 'ज्ञानमती' लक्ष्मी हेतू, उन सबको वंदन पुनः पुनः।।६।।



कोई-कोई जिन विदेह में, दो तीन कल्याणक को भि धरें।
औ पंचकल्याणक के स्वामी, वे सब मम चित्त पवित्र करें।।
जो नितप्रति यह स्तुती पढ़ें, वे पहले सीमंधर जिन के।
दर्शन करते हैं फिर निश्चित, संपूर्ण कल्याणक को भजते।।७।।

# पाँच महाविदेह संबंधी विद्यमान बीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेंद्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री युगमंधरजिनेंद्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री बाहुजिनेंद्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री सुबाहुजिनेंद्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री संजातकजिनेंद्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभजिनेंद्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री ऋषभाननजिनेंद्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यजिनेंद्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री सूरिप्रभजिनेंद्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री विशालकीर्तिजिनेंद्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री वज्रधरजिनेंद्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री चंद्राननजिनेंद्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री चंद्रबाहुजिनेंद्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री भुजंगमजिनेंद्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री ईश्वरजिनेंद्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री नेमीप्रभजिनेंद्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री वीरसेनजिनेंद्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री महाभद्रजिनेंद्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री देवयशोजिनेंद्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री अजितवीर्यजिनेंद्राय नमः।

# श्री सीमंधर तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

श्रीमती मात स्वप्ने देखें, श्रेयांस नृपति से फल पूछें।
तीर्थंकर सुत जननी होंगी, सुन माता मन में अति हर्षें।।
इन्द्रों ने उत्सव किया विविध, धनपति ने रत्नवृष्टि की थी।
हम वंदें गर्भकल्याणक नित,जिससे होवे धन की वृष्टी।।१।।

सीमंधर प्रभु ने जन्म लिया, स्वर्गों में बाजे बाज उठे।
सुरपति के सिंहासन कंपे, इंद्रों के मस्तक मुकुट झुकें।।
प्रभु वृषभ चिन्ह पितु मात धन्य, जनता में हर्ष अपार हुआ।
हम वंदें जन्मकल्याणक नित, नमते ही चित्त प्रसन्न हुआ।।२।।

तीर्थंकर प्रभु जब राज्य छोड़, दीक्षा लेने का भाव किया।
लौकान्तिक सुर ने आकर के, प्रभु की संस्तुति कर पुण्य लिया।।
प्रभु ने जिनदीक्षा ग्रहण किया, अति घोर तपस्या करने को।
हम नमते दीक्षा कल्याणक, निज जन्म मरण दुख हरने को।।३।।

प्रभु को जब केवलज्ञान हुआ, धनपति ने तत्क्षण ही आकर।
गगनांगण में प्रभु समवसरण, रच दिया अखिल वैभव लाकर।।
पूरब विदेह में आज वहाँ, प्रभु समवसरण में राज रहे।
हम वंदें ज्ञानकल्याणक को, प्रभु समवसरण में राज रहे।।४।।

प्रभु घात अघाती कर्मों को, निश्चित ही मुक्ती पायेंगे।
हम भी उनकी भक्ती करके, निश्चित ही कर्म जलायेंगे।।
उन प्रभु का मोक्षकल्याणक हम, भक्ती से वंदें पुण्य भरें।
आत्मा को शुद्धात्मा करके, निज मानव जीवन धन्य करें।।५।।

# श्री युगमंधर तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

***–गीता छंद–***

मेरू सुदर्शन पूर्व क्षेत्र विदेह में दक्षिण दिशी।
विजया नगरि दृढ़रथ पिता माता सुतारा ने निशी।।
शुभ स्वप्न सोलह देखकर हर्षितमना पतिदेव से।
फल पूछतीं प्रभु गर्भकल्याणक नमूँ अति भक्ति से।।१।।

श्री आदि देवी मात की सेवा करें अति भक्ति से।
अति गूढ़ करतीं प्रश्न वे उत्तर दिया माँ युक्ति से।।
प्रभु जन्मते ही इन्द्रगण अति हर्ष से उत्सव किया।
सौधर्म सुरपति ने सुमेरू पर न्हवन विधिवत् किया।२।।

वैराग्य प्रभु का जानकर देवर्षि सुरगण आ गये।
शुभ पालकी में बिठाकर उद्यान सुन्दर ले गये।।
सम्पूर्ण परिग्रह छोड़कर प्रभु ने स्वयं दीक्षा लिया।
मनपर्ययी ज्ञानी हुये शुभ ध्यान आत्मा का किया।।३।।

प्रभु शुक्लध्यान प्रभाव से चउ घातिया का क्षय किया।
कैवल्य लक्ष्मी प्राप्त कर छ्यालीस गुण प्रगटित किया।।
जिन समवसृति में अधर राजें इंद्र शत मिल पूजते।
हम भी नमें कैवल्य संपति प्राप्ति हेतू भक्ति से।।४।।

गजचिन्हधारी नाथ 'युगमंधर' अघाती घात के।
निर्वाण पद को पायेंगे मैं जजूँ कर द्वय जोड़ के।।
ये प्रभू संप्रति राजते सुविदेह जम्बूद्वीप में।
जो भक्ति से नित वंदते वे दर्श प्रभु का पायेंगे।।५।।

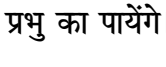

# श्री बाहु तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

*–शंभु छंद–*

श्री जम्बूद्वीप अपर विदेह, सीतोदा नदि के दक्षिण में।
श्री पुरी सुसीमा के राजा, उन रानी को शुभ स्वप्न दिखे।।
इन्द्रों ने गर्भोत्सव करके, प्रभु मात पिता की पूजा की।
हम भी जिन गर्भकल्याण नमें, मुझ गर्भ दुःख छूटे झटिती।।१।।

जब प्रभु ने जन्म लिया भूपर, देवों के आसन कांप उठे।
झुक गये मुकुट सब इंद्रों के, चल पड़े नगरि में भक्ती से।।
मृग चिन्ह सहित श्री बाहुनाथ ने, त्रिभुवन जन को मुदित किया।
मेरू पर सुरगण न्हवन किया, प्रभु जन्म नमत सुख प्राप्त किया।।२।।

प्रभु भव तनु भोग विरक्त हुये, बारह भावन भाई उत्तम।
लौकान्तिक सुर ने स्तुति की, पालकी सजाई उस ही क्षण।।
"सिद्धेभ्यो नमः" मंत्रपूर्वक, दीक्षा स्वयमेव लिया प्रभु ने।
सुरपति ने उत्सव किया तभी, मैं नमूँ नमूँ प्रभु चरणों में।।३।।

जिस तरु के नीचे प्रभुवर को, कैवल्यज्ञान रवि उदित हुआ।
वह तरु ' अशोक 'हो गया स्वयं, प्रभु समवसरण में शोभ रहा।।
श्री बाहुनाथ तीर्थंकर प्रभु, विहरण कर भविजन हर्षाते।
हम वंदें भक्ती श्रद्धा से, प्रभु धर्मामृत ध्वनि बरसाते।।४।।

प्रभु कर्म अघाती नाश सभी, निर्वाण धाम को पायेंगे।
उन मोक्षकल्याणक वंदन कर, हम भी निज कर्म नशायेंगे।।
तीर्थंकर प्रभु की भक्ती से, निज आत्मा स्वयं तीर्थ बनती।
सम्पूर्ण अमंगल टल जाते, भव भव की जनम व्याधि नशती।।५।।

# श्री सुबाहु तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

*–चौबोल छंद–*

श्री जम्बूद्वीप अपर विदेह, सीतोदा के उत्तर में।
हैं पुरी अयोध्या के राजा, उन अंतःपुर आंगन में।।
रत्न बरसते पिता खुशी से, बांट रहे हैं जन-जन में।
इंद्र महोत्सव करते मिलकर, नमूँ गर्भकल्याणक मैं।।१।।

ऐरावत हाथी पर चढ़कर, इंद्र शची सह आते हैं।
जिन बालक को गोदी में ले, सुरगिरि पर ले जाते हैं।।
मर्कट चिन्ह सहित प्रभुवर का, जन्म महोत्सव करते हैं।
जिनवर जन्मकल्याणक नमते, हम सुख संपति भरते हैं।।२।।

किंचित् कारण पाकर जिनवर, भव तनु भोग विरक्त हुये।
लौकान्तिक सुर स्तुति करते, प्रभु गुण में अनुरक्त हुये।।
रत्नजटित पालकि में प्रभु को, बिठा श्रेष्ठ वन में पहुँचे।
प्रभुवर स्वयं दिगंबर दीक्षा, लेकर ध्यानमगन तिष्ठे।।३।।

बहुत वर्ष तक तपश्चरण कर, कर्म घातिया दग्ध किया।
दोष अठारह दूर हुये, संपूर्ण गुणों को प्रगट किया।।
केवलज्ञान ज्योति उगते ही, समवसरण की है रचना।
भाक्तिभाव से नमन करूँ मैं, निश्चित पाऊँ सुख अपना।।४।।

प्रभुवर चौथे शुक्लध्यान से, योगनिरोध करेंगे ही।
निज के गुण अनंत को पाकर, शिवपद प्राप्त करेंगे ही।।
इंद्र सभी मिल मोक्षकल्याणक, उत्सव भक्ति करेंगे ही।
हम भी प्रभु का मोक्षकल्याणक, नमते सौख्य भरेंगे ही।।५।।

# श्री संजातक तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

*–नरेंद्र छंद–*

पूर्व धातकी विदेह पूरब, सीतानदि उत्तर पे।
अलकापुरि में देवसेन पितु, मातु देवसेना के।।
गर्भ बसे श्री संजातक प्रभु, सुरपति सुरगण नमते।
पुनर्जन्म के नाश हेतु हम, गर्भकल्याणक वंदें।।१।।

श्री आदि देवियों पूजित माँ से, जन्म लिया तीर्थेश्वर।
सुरपति जिन बालक को लेकर, बैठे ऐरावत पर।।
सुरगिरि पहुँचे जन्म महोत्सव, किया इंद्रगण मिलकर।
जन्मकल्याणक मैं नित वंदूँ, मिले जनम अविनश्वर।।२।।

रवी चिन्हयुत प्रभु विरक्त जब, इंद्र सभी मिल आये।
मणिमय रत्न पालकी में तब, प्रभुवर को बैठाये।।
मनहारी उद्यान पहुँच कर, प्रभु ने जिनदीक्षा ली।
दीक्षाकल्याणक नमते ही, मिले स्वात्मगुण शैली।।३।।

बहुत काल तक तपश्चरण कर, दीक्षा वन में पहुँचे।
शुक्लध्यान में लीन प्रभू तब, केवल रवि बन चमके।।
धनपति समवसरण रच करके, ज्ञानकल्याणक पूजें।
गंधकुटी में संजातक प्रभु, वंदत भव से छूटें।।४।।

संप्रति केवलज्ञानी जिनवर, शिवरमणी पायेंगे।
मृत्यु नाश मृत्युञ्जय होकर, सिद्धालय जायेंगे।।
इंद्र सभी प्रभु मोक्षकल्याणक, पूजेंगे भक्ती से।
मैं भी वंदूँ मोक्षकल्याणक, नशें कर्म युक्ती से।।५।।

# श्री स्वयंप्रभ तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

*–चौबोल छंद–*

विजय मेरु पूरब विदेह में, सीता नदि दक्षिण तट में।
विजया नगरी मित्रभूति पितु, सुमंगला माँ आँगन में।।
रत्न बरसते धनपति द्वारा, इंद्रों ने तब आकर के।
गर्भमहोत्सव किया मुदित हो, हम भी वंदें रुचि धर के।।१।।

पूज्य स्वयंप्रभ तीर्थंकर ने, पृथ्वी पर जब जन्म लिया।
इंद्राणी माँ के प्रसूतिगृह, जाकर शिशु का दर्श किया।।
सौधर्मेंद्र प्रभू को लेकर, रूप देख नहिं तृप्त हुआ।
नेत्र हजार बनाकर निरखे, जन्मोत्सव कर मुदित हुआ।।२।।

चन्द्र चिन्हयुत प्रभु विरक्त हो, अनुप्रेक्षा चिंतें मन में।
रत्नखचित पालकी सजाकर, इंद्र सभी आये क्षण में।।
श्रेष्ठ मनोहर वन में पहुँचे, प्रभु ने दीक्षा स्वयं लिया।
मनपर्ययज्ञानी ध्यानी को, नमत मिले वैराग्य प्रिया।।३।।

मौन सहित प्रभु तपश्चरण कर, ध्यान लीन तिष्ठे उत्तम।
शुक्लध्यान से घात घातिया, केवलज्ञान हुआ अनुपम।।
सुरपति ऐरावत गज पर चढ़, अगणित विभव सहित आये।
गजदंतों सरवर कमलों पर, अप्सरियाँ जिनगुण गायें।।४।।

संप्रति जिनवर समवसरण में, भव्यों को संबोध रहे।
सर्व कर्म हन शिव पायेंगे, उन वंदत शिव सौख्य लहें।।
इंद्र असंख्यों देव देवियों, सहित नित्य वंदन करते।
गणधर वंदित मोक्षकल्याणक, वंदत निज संपति भरते।।५।।

# श्री ऋषभानन तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

*–गीता छंद–*

वर धातकी पश्चिम विदेहे, नदी सीतोदा तटे।
नगरी सुसीमा पिता नृपकीर्ती प्रजापालक कहें।।
माँ वीरसेना गर्भ में, आये प्रभू त्रिभुवनपती।
इंद्रादि मिल उत्सव किया, वंदत मिले अनुपम गती।।१।।

मृगपती चिन्ह समेत तीर्थंकर, प्रभू शुभ योग में।
जन्में उसी क्षण सर्व बाजे, बज उठे सुरलोक में।।
तिहुँ लोक में भी हर्ष छाया, तीर्थकर महिमा महा।
सुरशैल पर जन्माभिषव को, देखते ऋषिगण यहाँ।।२।।

किंचित् निमित को प्राप्त कर, वैराग्य उपजा नाथ को।
देवर्षिगण आये वहाँ, संस्तव किया अति मुदित हो।।
पालकी मणिमय में बिठा, उद्यान सुंदर ले गये।
स्वयमेव दीक्षा ली प्रभो, त्रैलोक्य में वंदित हुए।।३।।

तीर्थेश ऋषभानन प्रभू, कैवल्य लक्ष्मीपति हुये।
धनदेव कृत द्वादश सभा के, नाथ कमलापति हुये।।
अनुपम समवसृति मध्य में, तीर्थेश प्रभु राजें वहाँ।
द्वादश गणों के भव्य जिनध्वनि, सुनें अति प्रमुदित वहाँ।।४।।

भगवान जब शिव जायेंगे, तब जायेंगे फिर भी यहाँ।
उन भक्तगण प्रभु पूजकर, निज संपदा पाते अहा।।
प्रभु भक्ति भवदधितारणी, भवदुःख संकटहारिणी।
संपूर्ण सौख्यप्रदायिनी, मैं नमूँ आनंदकारिणी।।५।।

# श्री अनंतवीर्य तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

*–रोला छंद–*

पूर्व धातकी खण्ड, अपर विदेह नदी तट।
पुरी अयोध्या वंद्य, पिता मेघरथ सुरनुत।।
मात मंगला स्वप्न, अवलोकें हर्षित मन।
रत्नवृष्टि धनराज, करते थे प्रमुदित मन।।१।।

जन्म लिया भगवान, इंद्र महोत्सव कीया।
हस्ति चिन्ह अमलान, त्रिभुवन आनंद लीया।।
वंदूँ भक्ति समेत, अनंतवीर्य भगवंता।
परमामृत सुख हेतु, नमूँ नमूँ शिवकांता।।२।।

प्रभु विरक्ति मन लाय, द्वादश भावन भायी।
लौकान्तिक सुर आय, चरण जजें शिर नाई।।
इंद्र सुरासुर आय, तपकल्याण मनाया।
वंदूँ मन हर्षाय, मिले जिनेश्वर छाया।।३।।

घोर तपस्या धार, घाति कर्म को नाशा।
केवल रवि प्रगटाय, सकल जगत परकाशा।।
समवसरण के ईश, दिव्यध्वनी के स्वामी।
नमूँ नमूँ नत शीश, तुम हो अन्तर्यामी।।४।।

सकल कर्म को नाश, प्राप्त करेंगे शिव को।
सकल काल विश्राम, पावेंगे निजसुख को।।
तीर्थंकर भगवान, सिद्धिरमा के स्वामी।
नमत मिले भव अंत, बनूँ स्वात्म विश्रामी।।५।।

# श्री सूरिप्रभ तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

*–गीता छंद–*

पश्चिम सुधातकि द्वीप में वर अचल मेरु प्रसिद्ध है।
पूरब विदेह सुमध्य सीता नदी उत्तर में कहे।।
विजयापुरी पितु नागराज प्रसू सुभद्रा सुर नमें।
श्री सूरिप्रभ गर्भावतार सुवंदते नहिं भव भ्रमें।।१।।

गुण पुंज भगवन पुण्यफल, प्रभु जन्मते बाजे बजे।
देवों के आसन कंप उठे, शत इंद्रगण हर्षित अबे।।
सुर शैल पर तीर्थेश प्रभु का, जन्म अभिषव था हुआ।
जिन जन्मकल्याणक नमत, मेरा जनम पावन हुआ।।२।।

प्रभु राज्य शासन किया, फिर मन में विरक्ती छा गई।
सुरगण स्वयं ही आ गये, वर पालकी तब आ गई।।
सुरपति मनोहर बाग में, लेकर गये प्रभु चौक पे।
"सिद्धं नमः" कह लोच कर, दीक्षा ग्रही वंदूँ अबे।।३।।

बहु विध तपस्या कर जिनेश्वर, शुक्लध्यानी हो गये।
दीक्षा तरू तल में त्रिलोकी, सूर्य केवल पा गये।।
सुंदर समवसृति में अधर, तिष्ठे असंख्यों भव्य को।
संबोध वच पीयूष से, तारा नमूँ जिनसूर्य को।।४।।

बहुकाल भू पर श्रीविहार, समस्त जन सुख हेतु हैं।
गुणथान चौदह के उपरि, मुक्तीनगर अभिप्रेत है।।
अतिशय अतींद्रिय सौख्य, परमानंद अमृत पायेंगे।
श्री सूरिप्रभ का मोक्षकल्याणक, नमूँ गुण गाय के।।५।।

# श्री विशालकीर्ति तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

*–चौपाई–*

पूर्व विदेह क्षेत्र अमलान।
पुण्डरीकिणी नगरी जान।
पिता विजय राजा गुणवान।
माता विजया सुर नर मान्य।।१।।

जन्में तीर्थंकर भगवान।
नाम विशालकीर्ति गुणखान।
सुर जन्मोत्सव किया अपार।
नमत प्रभू को हर्ष अपार।।२।।

शशी चिन्ह प्रभु राज्य करंत।
पुनः विरक्त भये भगवंत।
इंद्र करें उत्सव गुरु मान्य।
नमूँ प्रभू का तप कल्याण।।३।

दीक्षा तरु नीचे धर ध्यान।
प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
पांच सहस धनु अधर जिनेश।
नमूँ ज्ञानकल्याण हमेश।।४।।

कर्म नाश करके शिवकांत।
प्रभू बनेंगे अक्षय नान्त।
संप्रति मैं पूजूँ जग सिद्ध।
नमूँ मोक्षकल्याण प्रसिद्ध।।५।।

# श्री वज्रधर तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

*–गीता छंद–*

पश्चिम विदेहे अचल मेरू, नदी सीतोदा तटे।
नगरी सुसीमा पद्मरथ, रानी सरस्वति मातु के।।
जब गर्भ तिष्ठे इंद्रगण, सुरवृंद माँ पितु को जजें।
हम गर्भकल्याणक नमत, संपूर्ण दुःखों से बचें।।१।।

नव मास नंतर अवतरें, सुरगृह स्वयं बाजे बजें।
जन्में जिनेश्वर उसी क्षण, सुरपति मुकुट भी थे झुके।।
माँ के प्रसूती सद्म जा, शचि ने शिशू को ले लिया।
सुरशैल पर अभिषव हुआ, वंदत जगत भव कम किया।।२।।

साम्राज्य क्षणभंगुर दिखा, वैराग्य मन में आ गया।
सुर पालकी पे प्रभु चढ़े, लौकांति सुर स्तुति किया।।
इंद्राणि निर्मित चौक पर, तिष्ठे स्वयं दीक्षा लिया।
प्रभु तपकल्याणक वंदते, मिल जाय जिन दीक्षाप्रिया।।३।।

प्रभु शंख चिन्ह प्रसिद्ध थे, लवलीन आतम ध्यान में।
सब घातिया को घात कर, प्रभु केवली भास्कर बने।।
धनदेव निर्मित समवसृति में, गंधकुटि में शोभते।
द्वादश सभा में भव्य नमते, हम प्रभू को वंदते।।४।।

प्रभु धर्म अमृत मेघ से, भवि तृप्त कर शिव जायेंगे।
परिपूर्ण परमानंद अमृत, सुख अतीन्द्रिय पायेंगे।।
सौधर्म इंद्र सुरादिगण, निर्वाण पूजन करेंगे।
हम आज ही निर्वाण, कल्याणक नमत सुख भरेंगे।।५।।

# श्री चन्द्रानन तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

*–सखी छंद–*

श्री क्षेत्र विदेह अपर में, सीतोदा नदि उत्तर में।
पुरि पुण्डरीकिणी नृप के, घर में सुरत्न बरसे थे।।१।।

सुर मुकुट हिले जिन जन्में, प्रभु वृषभ चिन्ह धर जग में।
अठ एक हजार कलश से, जिन न्हवन किया सुर हरषें।।२।।

चंद्रानन नाम प्रसिद्धी, संसार सौख्य से विरती।
तप लिया स्वयं जा वन में, वंदत मिल जावे तप मे।।३।।

नानाविध तप तप करके, प्रभु शुक्लध्यान में तिष्ठे।
केवल रवि उगा प्रभू के, मैं नमूँ त्रिजग भी चमके।।४।।

प्रभु मृत्युञ्जयी बनेंगे, मुक्ती का राज्य करेंगे।
हम भक्ति भाव से वंदें, भव भव के दुख से छूटें।।५।।

# श्री चन्द्रबाहु तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

*–रोला छंद–*

छह महिने ही पूर्व, धनद रतन बरसाये।
गर्भ बसे प्रभु आप, सब जन मन हर्षाये।।
इंद्र सुरासुर संघ, उत्सव करते भारी।
हम वंदें धर प्रीति, जिनवर पद सुखकारी।।१।।

पूरब पुष्करद्वीप, सीता नदि उत्तर में।
देवनंदि पितु मात-सती रेणुका गृह में।।
चंद्रबाहु जिन जन्म, त्रिभुवन मंगलकारी।
इंद्र किया अभिषेक, मैं वंदूँ सुखकारी।।२।।

पद्म चिन्ह धर नाथ, विरतमना सब जग से।
लौकान्तिक सुर आय, बहु स्तवन उचरते।।
इंद्र सपरिकर आय, तपकल्याणक करते।
हम वंदें नत माथ, सब दुख संकट हरते।।३।।

केवलज्ञान विकास, प्राप्त किया प्रभु तप से।
समवसरण में नाथ, राजें अधर कमल पे।।
इंद्र करें बहु भक्ति, बारह सभा बनी है।
सभी भव्य जन आय, सुनते दिव्यध्वनी हैं।।४।।

पायेंगे निर्वाण, कर्म अघाति नशा के।
आत्यन्तिक सुख शांति, काल अनंतानंते।।
विहरमाण हैं आज, फिर भी शिव पायेंगे।
नमत मोक्षकल्याण, हम भी शिव जायेंगे।।५।।

## श्री भुजंगम तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

*–चौपाई–*

पूरब पुष्कर पूर्व विदेह, सीता नदि दक्षीण दिशेह।
विजया नगरी जिनमति मात, वंदूँ गर्भकल्याणक नाथ।।१।।

पिता महाबल हर्षित धन्य, श्री भुजंगम प्रभु का जन्म।
मैं वंदूँ चरणाब्ज जिनेंद्र, जन्म कल्याण नमूँ शत इंद्र।।२।।

चंद्र चिन्ह जनवत्सल नाथ, हुये विरक्त महा बड़भाग।
लौकान्तिक सुर भक्ति विशाल, दीक्षा धरी नमूँ नत भाल।।३।।

शुक्लध्यानधारी भगवान, घात घाति ले केवलज्ञान।
समवसरण में प्रभु राजन्त, भक्ति भाव शत इंद्र जजंत।।४।।

मुक्तिराज्य पायेंगे नाथ, मुझ अनाथ को करें सनाथ।
भक्ति धार मन वंदूँ आज, पाऊँ त्रिभुवन का साम्राज।।५।।



## श्री ईश्वर तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

*–सखी छंद–*

पुष्कर में अपर विदेहा, सीतोदा नदि तट गेहा।
सुर वंदित नगरि सुसीमा, 'गलसेन' पिता की महिमा।।१।।

माँ 'ज्वालामति' सुत जन्में, सुर जन्ममहोत्सव कीने।
'ईश्वरप्रभु' नाम तुम्हारा, है सूर्य चिन्ह सुखकारा।।२।।

वैराग्य समाया मन में, दीक्षा धारी प्रभु वन में।
इंद्रों से पूजा पाई, हम वंदें मन हर्षायी।।३।।

प्रभु ध्यान धरा तरु तल में, केवलरवि प्रगटा निज में।
बारह गण को उपदेशा, हम वंदें भक्ति समेता।।४।।

परमानन्द पद पायेंगे, शिवपुरी प्रभू जायेंगे।
शत इंद्र करेंगे अर्चा, वंदत ही निज सुख मिलता।।५।।

## श्री नेमिप्रभ तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

*–शंभु छंद–*

पूरब पुष्कर पश्चिमविदेह, सीतोदा नदि के उत्तर में।
हैं नगरि अयोध्या के स्वामी, उनकी रानी देखें सपने।।
धनपति ने माता आंगन में, रत्नों की वर्षा अतिशय की।
हम गर्भ कल्याणक को वंदें, नहिं गर्भवास हो पुनः कभी।।१।।

प्रभु जन्में इंद्रासन कंपे, सुरतरु से स्वयं पुष्प बरसे।
सुरगिरि पर सुरपति ले करके, जन्मोत्सव करके अति हरषे।।
प्रभु नाम 'नेमिप्रभ' घोषित कर, माता के आंगन में लाये।
उन वृषभ चिन्ह को मैं वंदूँ, मेरी मन कलियाँ खिल जायें।।२।।

प्रभु वैरागी बन वन पहुँचे, कर केशलोंच जिनदीक्षा ली।
इंद्रों ने अतिशय पूजा की, प्रभु जिनवर मुनिचर्या पाली।।
इस घड़ी प्रभू को हम वंदें, निज दीक्षा का फल मिल जावे।
समकित संयम सुसमाधि मिले, भव भव का भ्रमण विनश जावे।।३।।

उत्कृष्ट ध्यान के बल से प्रभु, घाती कर्मों का घात किया।
कैवल्यश्री को प्राप्त किया, क्षण में त्रिभुवन साक्षात् किया।।
इंदों ने संख्यातीत देव, देवी सह आकर पूजा की।
प्रभु केवलज्ञान कल्याण नमूँ, सज्ज्ञानज्योति प्रगटे निज की।।४।।

संपूर्ण कर्म को हन करके, प्रभु मुक्तिपुरी को जावेंगे।
उन मोक्षकल्याणक का उत्सव, सुर नर मुनि सभी मनावेंगे।।
मैं मोक्षकल्याणक वंदन कर, अतिशायी पुण्य प्राप्त कर लूँ।
फिर स्वयं अतीन्द्रिय पद पाकर, निज गुण अनंत निज में भर लूँ।।५।।

## श्री वीरसेन तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

*–शंभु छंद–*

पश्चिम पुष्कर पूरब विदेह, सीता नदि के उत्तर जानो।
पुरि पुण्डरीकिणी भानुमती, माता भूपाल पिता मानो।।
गर्भावतार से छह महिने, पहले रत्नों की वर्षा की।
श्री वीरसेन का गर्भकल्याणक, वंदत मिटती भव व्याधी।।१।।

मेरू पर जन्म महोत्सव कर, इंद्रों ने आनंद नृत्य किया।
पितु माता धन्य हुए जग में, जनता में हर्ष अपार हुआ।।
प्रभु जन्मकल्याणक नमते ही, मिल जाती सब सुख संपत्ती।
मैं भी जिनवर वंदन करके, पा जाऊँ निज सुख संपत्ती।।२।।

प्रभु के मन जब वैराग्य हुआ, लौकान्तिक सुरगण आये थे।
प्रभु की स्तुती प्रशंसा कर, अतिशायी पुण्य कमाये थे।।



प्रभु ने स्वयमेव नमः सिद्धं, उच्चारण कर ली जिनदीक्षा।
मैं भी प्रभु तपकल्याण नमूँ, जिससे मिल जावे तप शिक्षा।।३।।

प्रभु ने उग्रोग्र तपस्या कर, कैवल्य सूर्य को प्रगट किया।
धनपति ने समवसरण रचकर, निज के जीवन को धन्य किया।।
संख्यातीते देवों ने भी, प्रभु की दिव्यध्वनि श्रवण किये।
मैं केवलज्ञान कल्याण नमूँ, जग जावे ज्ञानज्योति हृदये।।४।।

ऐरावत चिन्ह कहा प्रभु का, प्रभु समवसरण में राज रहे।
आगे संपूर्ण कर्म हन कर, शिव पायेंगे यह शास्त्र कहें।।
श्री वीरसेन भगवान मेरी, रत्नत्रय निधि को पूर्ण करें।
मैं मोक्षकल्याणक नित वंदूँ, मेरा यम संकट तूर्ण हरें।।५।।

## श्री महाभद्र तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

*–शंभु छंद–*

विद्युन्माली पूरब विदेह, सीतानदि के दक्षिण दिश में।
विजया नगरीपति देवराज हैं, जनक उमा माता सच में।।
प्रभु "महाभद्र" गर्भावतार, धनपति ने रत्नवृष्टि की थी।
मैं वंदूँ गर्भकल्याणक नित, पा जाऊँ जिनगुण संपत्ती।।१।।

प्रभु जन्म हुआ सुरपति गृह में, स्वयमेव वाद्य सब बाज उठे।
इंद्रों के मुकुट झुके तत्क्षण, सुरतरु से विविध सुमन बरसे।।
सौधर्म इंद्र ने मेरू पर, प्रभु जन्मकल्याणक न्हवन किया।
प्रभु जन्मकल्याणक नमते ही, संपूर्ण दुखों का शमन किया।।२।।

प्रभु ने कचलोंच किया विधिवत्, जैनेश्वरि दीक्षा ग्रहण किया।
उग्रोग्र तपस्या कर करके, भव्यों का मार्ग प्रशस्त किया।।
प्रभु का जो तप कल्याण नमें, निर्विघ्न मोक्षपथ पाते हैं।
हम भी प्रभु तपकल्याणक की, भक्ती करके हरषाते हैं।।३।।

प्रभु महाभद्र तीर्थंकर को, जब केवलज्ञान प्रकाश मिला।
त्रिभुवन में भी आनंद हुआ, सब जनता का मन कमल खिला।।
प्रभु कमलासन पर अधर रहें, भव्यों को नित संबोध रहें।
मैं वंदूँ ज्ञानकल्याणक नित, प्रकटित हो ज्ञानज्योति हृदये।।४।।

शशि चिन्ह से प्रभु को पहचानो, संप्रति ये समवसरण में हैं।
सिद्धीकन्या को पायेंगे, निश्चित यह आगम वर्णित है।।
इनके निर्वाणकल्याणक को, हम वंदन नितप्रति करते हैं।
भावी सिद्धों का अर्चन कर, संपूर्ण अमंगल हरते हैं।।५।।

## श्री देवयश तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

आवो हम सब करें वंदना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इंद्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।। वंदे जिनवरं -४ ।।टेक.।।

पश्चिम पुष्कर अपर विदेहे, सीतोदा के दक्षिण में।
श्रीभूती पितु गंगा देवी, मात सुसीमा नगरी में।।
गर्भ बसे प्रभु स्वप्न दिखाकर, पूजा गर्भकल्याण की।
इंद्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।। वंदे जिनवरं -४ ।।१।।

मति श्रुत अवधि ज्ञानयुत, स्वस्तिक चिन्ह सहित प्रभु जन्मे थे।
मेरू पर जन्माभिषेक में, देव देवियाँ हर्षे थे।।
जन्मकल्याणक वंदन करते, मिले राह उत्थान की।
इंद्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।। वंदे जिनवरं -४ ।।२।।

नाम देवयश रखा इंद्र ने, सब जन मन संतुष्ट हुये।
प्रभु को जब वैराग्य हुआ, इंद्रों ने आ संस्तवन किये।।
दीक्षा क्षण नमते मिल जावे, बुद्धि आत्मकल्याण की।
इंद्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।। वंदे जिनवरं -४ ।।३।।



घाति चतुष्टय घात किया प्रभु, केवलज्ञान सूर्य प्रगटा।
समवसरण बन गया अधर में, धनद भक्ति में झूम उठा।।
गंधकुटी में किया सभी ने, पूजा केवलज्ञान की।
इंद्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।। वंदे जिनवरं -४ ।।४।।

सर्व अघाती नाश मुक्ति-कन्या परणेंगे तीर्थंकर।
नाथ देवयश सौ इंद्रों नुत, मुनीवंद्य जगपूज्य प्रवर।।
जो निर्वाणकल्याणक वंदें, मिले राह निर्वाण की।
इंद्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।। वंदे जिनवरं -४ ।।५।।

## श्री अजितवीर्य तीर्थंकर पंचकल्याणक स्तुति

वंदन शत शत बार है,
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका गर्भकल्याणक नमते, मिले सौख्य भण्डार है।।
अजितवीर्य.....।।

विद्युन्माली मेरु पश्चिम, विदेह नदि के उत्तर में।
पुरी अयोध्या पितु सुबोध नृप, प्रसू कनकमाला उर में।।
गर्भ बसे जगवंद्य नमूँ नित, मिले निजातम सार है।
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।।१।।
वंदन शत शत बार है,
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका जन्मकल्याणक नमते, मिले सौख्य भण्डार है।।
अजितवीर्य.....।।

श्री ह्री आदिक देवी नुत, माता से प्रभु का जन्म हुआ।
मेरू पर ले जा वैभवयुत, इंद्रों ने प्रभु न्हवन किया।।
कमल चिन्हयुत जिनवर नमते, हो जाते भव पार हैं।
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।।२।।

वंदन शत शत बार है,
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में,वंदन शत शत बार है।
जिनका तपकल्याणक नमते, मिले सौख्य भण्डार है।।
अजितवीर्य.....।।

अजितवीर्य प्रभु नाम रखा, इंद्रों ने पूजा भक्ति किया।
जब वैराग्य हुआ प्रभुवर को, लौकान्तिक सुर स्तवन किया।।
स्वयं प्रभू ने दीक्षा ली थी, नमत मिले भव पार है।
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।।३।।

वंदन शत शत बार है,
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका ज्ञानकल्याणक नमते, मिले सौख्य भण्डार है।।
अजितवीर्य.....।।

घोर तपश्चर्या कर प्रभु ने, घातिकर्म को दग्ध किया।
धनपति ने आकर भक्ती से, समवसरण झट बना दिया।।
अजितवीर्य श्री केवलि प्रभु का, समवसरण हितकार है।
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।।४।।
वंदन शत शत बार है,
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका मोक्षकल्याणक नमते, मिले सौख्य भण्डार है।।
अजितवीर्य.....।।

सर्व अघाती कर्म नाश कर, मोक्षधाम में जायेंगे।
सिद्धिप्रिया शिवराज्य प्राप्त कर, शाश्वत काल बितायेंगे।।
मुनी गणाधिप भक्ती करके, पायेंगे सुखसार है।
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।।५।।



*–शंभु छंद–*

जम्बूद्वीप के विदेहक्षेत्र में, चउ जिनवर विहरण करते हैं।
पूरब धातकि पश्चिम धातकि में, चउ चउ जिनवर राजत हैं।।
पूर्वापर पुष्करार्ध में भी, चउ चउ तीर्थंकर शोभ रहे।
इन बीस तीर्थंकर को नमते, कैवल्यज्ञानमति सौख्य लहें।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हं जम्बूद्वीपविदेहक्षेत्र पूर्वधातकीखण्डद्वीप पश्चिमधातकीखण्ड-द्वीपसंबंधिविदेहक्षेत्र पूर्वपुष्करार्धद्वीप पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिविदेहक्षेत्रस्थित-विद्यमान श्रीसीमंधर युगमंधर बाहु-सुबाहु संजातक स्वयंप्रभ ऋषभानन अनंतवीर्य सूरिप्रभ विशालकीर्ति वज्रधर चंद्रानन चंद्रबाहु भुजंगम ईश्वरनाथ नेमिप्रभ वीरसेन महाभद्र देवयश अजितवीर्यनामविंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

**जाप्य मंत्र**— ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

# प्रशस्ति

वीर अब्द पच्चीस सौ, तेरह मगसिर मास।
तिथि पूर्णा हस्तिनापुरी, तीर्थ धर्म की राशि।।१।।

विद्यमान श्री बीस जिन, स्तुति रचना पूर्ण।
गणिनी ज्ञानमती रचित भरे सौख्य सम्पूर्ण।।२।।

जब तक तीर्थंकर प्रभू, जैनधर्म सुखखान।
तब तक तीर्थंकर स्तवन, करे जगत कल्याण।।३।।